**Name of the Scholar** : **Poonam**
**Name of the Supervisor** : **Dr. Krishan Kumar Kaushik**
**Name of the Department** : **Depaartment of Hindi**
**Title of the thesis** : **Mahadevi Verma ke Sahitya Mein Nihit Naari Drishti ka Adhyayan**

## ABSTRACT OF THE PH.D. THESIS

### महादेवी वर्मा के साहित्य में निहित नारी दृष्टि का अध्ययन

महादेवी वर्मा के साहित्य में जो नारी दृष्टि है वह उस काल में किसी अन्य लेखक में नही मिलती। इनकी कविता 'छायावाद' में ठहर जाती है लेकिन गद्य जीवन भर इनमें सक्रिय रहता है। वह नारी के अनछुए-अनजाने पहलुओं के विचार केन्द्र में लाती है। उपेक्षिता और नारी विषयक निबंधों, रेखाचित्रों, संस्मरणों में महादेवी ने जिस क्रांतिकारी समाजिकता के विस्तार का परिचय दिया है उसका समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र हमारे आंखे खोलने वाला है। उन्होंने विधवाओं और अवैध संतानों तथा उपेक्षित नारियों पर बहुत गहराई से चिंतन किया है। महादेवी वर्मा समूची स्त्री जाति की उन्नति के लिए जागृत स्थितियों को प्रतिनिधित्व बनकर आने का आह्वान करती है। ये आह्वान प्रभुत्व की आकांक्षा के लिए नहीं है, ये मध्यम श्रेणी की महिलाओं की कठिनाइयों की निवृत्ति के लिए राजनैतिक अधिकारों से पहले ऐसी सामाजिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण का सवाल उठाती है, जिससे उसके जीवन में स्वावलम्बन और आत्मविश्वास आ सके।

किसी भी समाज का विकास स्त्री के बिना संभव नहीं है। इसलिए समय-समय पर गठित विभिन्न शिक्षा आयोगों व समितियों ने नारी शिक्षा के प्रसार एवं विकास हेतु अनेक महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। महाराष्ट्र में शिक्षित पत्नियों की पहली पीढ़ी में काशीबाई, कांतिकर, आनंदीबाई जोशी, रमाबाई रानाडे का प्रारंभिक वैवाहिक जीवन असुरक्षित तथा संघर्षमय रहा। उनके इस संघर्ष का उद्देश्य व्यक्तित्व का विकास या रोजगार पाकर आत्मनिर्भर बनाना नहीं था वरन् आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर स्वयं को पतियों की आकांक्षाओं के अनुरूप ढालना था। उमा चक्रवर्ती द्वारा पं. रमाबाई पर लिखी गई पुस्तक में बताती हैं कि यह शिक्षा भी पुरानी पितृसत्तात्मक शिक्षा व्यववस्था से गुणात्मक रूप से भिन्न नहीं थी। स्त्री शिक्षा प्राप्त करती है तो अपने लिए 'अधिकार' जैसे शब्द से परिचित होती है। महादेवी वर्मा की पूर्व परम्परा में मध्यकाल में ललद्यत, दयाबाई व मीराबाई प्रमुख रहीं, जिन्होंने भक्ति के साथ-साथ स्त्री जीवन को भी समाज के सामने उजागर किया।

परिवार-संस्था में महिला को बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जैसे- भ्रूण हत्या, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, दहेज जैसा महामाया मंडित 'दान' बनाम हत्या। आजकल डॉक्टर, आई.ए.एस. जैसी पढ़ी-लिखी महिलाएँ भी दहेज का शिकार होती है, मगर सामाजिक ताने-बाने के कारण खामोश रहती हैं। हमारी कानूनी प्रक्रिया में हमेशा स्त्री पिसती रही है। चाहे वो पत्नी धर्म हो, विधवा जीवन हो, घरेलू हिंसा हो, प्रेम करना हो, देवदासी बनना, सती प्रथा, पर्दा प्रथा हो, ये वह कानून के रूप हैं जिन्हें स्त्री झेलती रही है तथा सबसे ज्यादा घरेलू हिंसा है। हैरत की बात यह है कि कानून न्यायालय में तो बन गए परन्तु हमारे घरों में लागू न हो सके।

स्त्री की इस असमानता पर विमर्श में भारतीय बुद्धिजीवी भी पीछे नहीं रहे। अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार और पसार के साथ-साथ भारतीय क्षितिज में भी नवजागरण का भी आगमन हुआ। पश्चिमी शिक्षा के प्रचार-प्रसार से वहाँ की उदारवादी विचारधारा से प्रभावित बुद्धिजीवियों तथा समाज सुधारकों की एक समुदाय तैयार हो गया। इस जमात के अधिकांश सदस्य ऊँची जातियों और संभ्रांत परिवारों से थे। कट्टरपंथी रूढ़ियों, परंपराओं तथा रीति-रिवाजों से इन्हीं जातियों की स्त्रियाँ सर्वाधिक जकड़ी थी। सामाजिक स्तर पर काशीबाई कांतिकर, आनंदीबाई जोशी, रमाबाई रानाडे का प्रारंभिक वैवाहिक जीवन असुरक्षित तथा संघर्षमय रहा। मगर हिन्दी जगत के साहित्य में महादेवी वर्मा ने तो वैवाहिक जीवन से ही इंकार कर दिया था जबकि उस दौर में विवाह से इंकार करना बहुत ही संघर्ष और चुनौतीपूर्ण कार्य रहा होगा। महादेवी वर्मा नवजागरण की पहली कवयित्री के रूप में उभरी।

नारी समस्याओं को लेकर महादेवी संयत एवं तार्किक हैं वो कहती हैं आजादी हम औरतों को मांगने से कहां मिलती है वो तो छीनकर लेनी होगी। हमारा समाज घर संस्कृति, परम्परा, आधुनिकता, जाति, वर्ग आदि समस्याओं से लड़ रहा है और लड़ता रहेगा, इसके लिए महादेवी कहती हैं कि समस्या का समाधान समस्या के ज्ञान पर निर्भर है और यही ज्ञान महादेवी वर्मा का नवजागरण है जहां पर समस्याओं से मुक्ति है और नवजागरण मुक्ति की आकांक्षा ही है। नवजागरण का दौर जब शुरू हुआ तब राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द विद्यासागर नारी के जीने के अधिकार को नारी से ही अवगत करा रहे थे। उसमें जीवन की इच्छा की जिजिविषा की शुरुआत कर रहे थे। बाबा फूले और सावित्री बाई फूले ने शिक्षा, विशेषकर स्त्री शिक्षक की

मुहिम छेड़ी और विधवा ब्राह्मण स्त्रियों की अवैध संतानों को पाला और पढ़ाया तथा उन्हें वेश्या बनने से बचाया। भारत में नारी मुक्ति की इस पूरी मुहिम में एक मात्र स्त्री सावित्री बाई फूले ही थी।

महादेवी के रेखाचित्रों में अशिक्षित, दलित तथा शोषित के जीवन की झलकियाँ हैं, जिन्हें समाज अछूत तथा अशिक्षित होने के कारण ठुकरा देता है, ऐसे चित्र महादेवी वर्मा की करुणा तथा सहानुभूति के द्वारा सजीव हो गये हैं। इनके काव्य में नारी की जिस रूप में अभिव्यक्ति हुई है वह उस दौर के अन्य कवि में नहीं मिलती। शायद यहाँ पर स्वानुभूति और सहानुभूति का अन्तर स्पष्ट हो जाता है। समकालीन नारी चेतना देश और राष्ट्र की सीमाओं का अतिक्रमण कर सार्वभौमिक मानदण्डों से निर्दिष्ट हो रही है। यह स्त्री में आ रही जागरूकता तथा बदलते पुरुष नजरिये ने जहाँ इसके सहज स्वाभाविक मानवीय चेतना को उद्‌बुद्ध किया है, वही वैश्विक बाजारवाद ने स्त्री देह का व्यवसायीकरण भी किया है। महादेवी देह की सत्ता को चुनौती देती है। इनके प्रगीतों में राजनीतिक-सामाजिक नवजागरण के संदर्भ संश्लिष्ट सूक्ष्म-जटिल और मुखर है, लेकिन इनके गद्य में उनकी सामाजिकता का विस्तार-उपेक्षित और नारी यातना का विस्तार एकदम चकित कर देने वाला है।

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया क तेज हो जाने के कारण विभिन्न माध्यमों से लेकर अन्य विमर्श के क्षेत्रों में स्त्री देह का प्रदर्शन और उसकी शारीरिक सौष्ठव छवि पर ही ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। भूमण्डलीकरण ने स्त्री देह से स्त्री की आत्मा को बाहर कर दिया है। इसका जवाब देते हुए महादेवी कहती है कि नारी ऐसा यंत्र मात्र नहीं, जिसके सब कल-पुर्जों का प्रदर्शन ही ज्ञान पूर्णता और उनका संयोजन की क्रियाशीलता हो सके। महादेवी वर्मा आज के स्त्री विमर्श की खामी को बहुत पहले ही पहचान चुकी थी। इसलिए वो हर पहलू को साथलेकर चली चाहे वो अधिकार की बात हो या फिर सामाजिक कर्तव्य की, वो किसी एक पक्ष तक सीमित नहीं होती अपने मतों को लेकर। उनकी पीड़ा स्वयं की पीड़ा नहीं बल्कि समूचे समाज की पीड़ा है जिसमें स्त्री अपने अधिकारों की मांग करती है। महादेवी वर्मा पीड़ा की गूढ़ता या पलायन की पक्षधर नहीं थी। 'पीड़ाएँ' उनके यहाँ मनोमयी भव्यता की संरचनाएँ भी नहीं हैं बल्कि उसको सदैव प्रतिरोध की आग है। यह उनकी सामाजिक जवाबदेही का रूप है जो उनकी गद्य विधाओं में प्रतिफलित हुआ है।

महादेवी वर्मा की रचनात्मक मेधा ने अपनी परिपक्वता का बिंदु बहुत जल्द अर्जित कर लिया था। नए भरतीय समाज और नए स्त्री-पुरुषों की आकांक्षा के साथ उनकी सृजन भाषा ने अपनी स्मृति और समृद्धि का भरपूर उपयोग किया। संस्कृत की वह विद्यार्थी रही थी। वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति को उन्होंने पढ़ा था, टैगोर आदर्श थे। इस प्रकार क्लासिकी का बड़ा स्पष्ट प्रभाव उनके भावजगत और भाषा पर भी दिखाई देता है। यह उनके आत्मविस्तार की भूमिका थी। इसी की शक्ति के द्वारा वे अपने समय के क्षरणशील के मुकाबले मानवीय और मूल्यवान की पहचान कर उसकी शक्ति बनती रहीं। मूल्याधारित समाज उनकी आकांक्षा था और मानवीय सहयोग, मैत्री और करुणा इसकी सहज कसौटी।

महादेवी वर्मा उन आधुनिक विद्रोहशील नारी के विडम्बनामय जीवन को भी उठाती हैं, जो नारी सुलभ कोमल तथा भावुकता को अपने लिए लौह-शृंखलाएँ मानती हैं। इस प्रकार के दृष्टिकोण को वे नारी-पुरुष समाज के विवेक और हृदयहीन व्यवहार की प्रतिक्रिया मात्र मानती है। महादेवी वर्मा के मन में भारतीय नारी की भावी स्वाधीनता का विश्वास है। वे जब स्त्री की बात करती हैं तो देश, समाज, संस्कृति को भी साथ लेकर चलती हैं क्योंकि ये सभी एक दूसरे पर निर्भर हैं, तथा किसी भी समाज का स्वस्थ निर्माण यहीं से होता है। महादेवी वर्मा के गद्य का निर्भय स्वर उनके पद्य की रहस्यवादी छवि को तोड़ता है। महादेवी के खुलेपन का प्रमाण गद्य देता है पद्य नहीं। पद्य में बात छिपी हुई है जिसे रहस्यवाद नाम मिला लेकिन यह रहस्यवाद मध्यकालीन नहीं वरन् आधुनिक है महादेवी के रहस्यवाद को आधुनिक ज्ञान विज्ञान क आलोक में देखना चाहिए उन्होंने कहीं भी भौतिकता का धरातल नहीं छोड़ा है। महादेवी की कविता आधुनिक युग की जिज्ञासा वृत्ति और नारी चेतना का परिणाम है। अपनी कविता में महादेवी बार-बार मिटने की व अधिकार की बात करती नज़र आती है जिसमें नारी के अधिकारों के लिए सामने आती है ऐसे अधिकारों से जिसे नारियों से सदियों से अनभिज्ञ रखा गया।

महादेवी वर्मा अपने गद्य में ऐतिहासिक पात्रों का नहीं अपितु निम्न वर्ग, उपेक्षित व बहिष्कृत पात्रों के माध्यम से ही भारत की नारी स्थिति का वर्णन कर देती है। बिबिया, भक्तिन, सबला, भाभी, बिट्‌टो, बिन्दा और लछमा ऐसे पात्र हैं जहाँ स्त्री गाथा का सच बाहर आता है, क्योंकि ये रेखाचित्र और संस्मरण काल्पनिक नहीं है। वह नारी विमर्श के लिए किसी कल्पना का सहारा नहीं लेती है। महादेवी वर्मा बुनियादी सवालों को उठाती हैं जिसका परिवार से लेकर राष्ट्र निर्माण में महत्व असंदिग्ध है। महादेवी वर्मा का नारी चिंतन परंपरा के बंधनों से जकड़ी नारी के लिए देह की मुक्ति के बजाय चुनौती देता है जिसका अंतिम ध्येय सभ्य और सुसंस्कृत समाज का पुनर्निर्माण करना है जो स्त्री की निगाह में सिर्फ पुरुष या विचार मात्र नहीं है बल्कि नारी-समस्याओं पर राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक संदर्भों में गहराई से चिंतन करता है।